INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

A REFEREED JOURNAL OF

Shri Param Hans Education & Research Foundation Trust

www.IRJMSH.com
www.SPHERT.org

Published by iSaRa

हिन्दी पद्य के सन्दर्भ में सौन्दर्य–बोधविकसित करने की शिक्षण–रणनीति की प्रभावशीलता का अध्ययन।

✦ घीसालाल लोधा

शोधार्थी जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) उदयपुर – राज.।

✦✦ डॉ. अनिता कोठारी

सहायक आचार्या लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सी.टी.ई., उदयपुर –राज.।

E-mail:- gllovevanshi@gmail.com

शोध प्रस्तावना :–

ज्ञान को सरलतम अधिगामी बनाने में शिक्षक–शिक्षा एक तरह से कलात्मक शैली है। और इस कला की निपुणता पर खरा उतरना प्रत्येक मनुष्य के लिए असम्भव तो नही परन्तु अत्यंत कठिन अवश्य है। इस लिए कहा गया है कि –

''शिक्षक बनना तपस्या करने के समान है।''

मनुष्य यह भली भॉति जानता है कि सफलता प्राप्ति की कोई लधु या सीमान्त यात्रा नही होती है। फिर भी आज मनुष्य एक कदम् की यात्रा शुरू किये बिना अपनी मंजिल पाना चाहता है। शिक्षक–शिक्षा की प्रणाली भी इस समय इस परिवेश से अछूती नही है।

''आज का शिष्य भारत का भविष्य।कैसे बनेगा वो सदाचारी मनुष्य।।''

यह एक गहन मनन का विषय है।

शिक्षक द्वारा ज्ञान को शिक्षार्थी तक पहुँचानें का वांछित माध्यम यदि मातृ–भाषा हो तो उसका आधा कार्य वैसे ही सफल हो जाता हैं। और हमारे राष्ट्र में हिन्दी भाषा को ही मातृ–भाषा एवं राष्ट्रभाषा कहलाने का गौरव प्राप्त हैं।

भारत माता के माथें की बिंदी यह हिन्दी हमारी राष्ट्रीयता का मापदण्ड हैं। अनेक वर्षो सें हिन्दी प्रेम स्वदेश प्रेम का अभिन्न अंग माना जाता हैं। अतः राष्ट्रीयता के रचनात्मक कार्यों में हिन्दी प्रचार कों विशेष स्थान दिया गया हैं।

हिन्दी की सेवा राष्ट्र की सेवा हैं, जनता जनार्दन की सेवा हैं, लोकतंत्र की सेवा हैं। हिन्दी के माध्यम से ही भारतीयता का साक्षात् दर्शन सम्भव हैं।

छात्रों का हिन्दी पर हक हो सकें, भाषायी कौशलों में दक्षता अर्जित कर सकें, साहित्य की विभिन्न विधाओं से परिचित हो सकें, शिक्षक को इस बात का पूर्ण प्रयत्न करना आवश्यक हैं।

साहित्य ही समाज का दर्पण होता हैं। साहित्य की ही सभी विशिष्ट विधाओं में काव्य शिक्षण के अंतर्गत पद्य/कविता शिक्षण विभाग सम्पूर्ण मानव जगत का कंठाहार हैं।

इसलिए –**कविता केवल आँखों से पढ़ने की वस्तु नही हैं। यह एक वाच्य एवं श्रव्य कला हैं।**

1. **शोध कथन :–हिन्दी पद्य के सन्दर्भ में सौन्दर्य–बोध विकसित करने की शिक्षण–रणनीति की प्रभावशीलता का अध्ययन।**

उद्देश्य : –

1. विद्यार्थियों में हिन्दी पद्य शिक्षण में सौन्दर्य–बोध विकसित करने हेतु **शिक्षण रणनीतियाँ बनाना।**
2. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से **छात्रों** में विकसित **भावात्मकसौन्दर्य–बोध** कापता लगाना।
3. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से **छात्राओं** में विकसित **भावात्मक सौन्दर्य–बोध** कापता लगाना।

2. **परिकल्पनाएँ –**

1. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से **छात्रों** में विकसितभावात्मक सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से **छात्राओं** में विकसितभावात्मक सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. **शोध–औचित्य : –**

शिक्षा जगत की भाषायी शिक्षण श्रृंखला में भी इस वर्तमान परिवेश में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना शिक्षक शिक्षार्थियों को शिक्षण अधिगम के क्षेत्र में करना पड़ता हैं।यथा –उच्चारण की समस्या, वाचन की समस्या, लेखन की समस्या, अधिगम की समस्या, रसास्वादन की समस्या एवं काव्य समीक्षा की समस्या आदि।इन्ही समस्याओं में से एक समस्या इस समय हिन्दी के काव्य शास्त्र जगत के समक्ष भावात्मक सौन्दर्य–बोध से संबधित उपस्थित है। विद्यार्थियों को कई

बार कविता में विद्यमान भावात्मक सौन्दर्य का बोध नहीं हो पाता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस समस्या को अध्ययन के लिए चुना गया।

4. **शोध–अध्ययन विधि :** –इस शोध–कार्य में **प्रयोगात्मक–विधि** का प्रयोग किया गया है।
5. **शोध–उपकरण :** –शोध–कार्य में सौन्दर्य–बोध का अध्ययन करने के लिए अनुसंधानकर्त्ता द्वारा स्वनिर्मित **शिक्षण रणनीति वउपलब्धि–परीक्षण** उपकरण का उपयोग किया गया है।

   उपलब्धि–परीक्षणनिर्माण क्षेत्र : – 1. भावात्मक सौन्दर्य–तत्त्व।

6. **शोध–न्यादर्श :** –इस प्रायोगिक–कार्य को करने के लिए न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। जिसमें राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय झालरापाटनकक्षा –12 के 30छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।

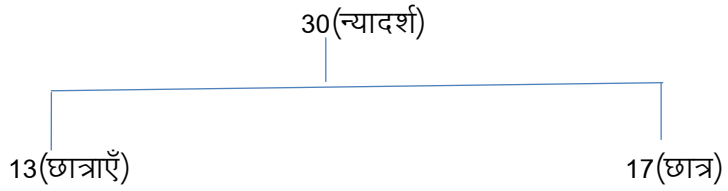

7. **शोध–सांख्यिकी :** –इस अध्ययन में मध्यमान एवं प्रतिशत मध्यमान सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।
8. **समस्या का सीमांकन :** –इस प्रायोगिक–कार्य के समय, साधनों की उपलब्धता एवं परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए समस्या का परिसीमन करना आवश्यक है। इस अध्ययन में राजस्थान के झालावाड़ जिले केझालरापाटनकेराजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय छात्र–छात्राओं को ही शामिल किया गया है।
9. **प्रदत्त–विश्लेषण :** –

   उद्देश्य : –

   1. **"विद्यार्थियों में हिन्दी पद्य शिक्षण में सौन्दर्य–बोध विकसित करने हेतु शिक्षण रणनीतियाँ बनाना।"**

      इस उद्देश्य के अनुसार छात्र–छात्राओं को भावात्मक सौन्दर्य का बोध कराने के प्रयास में शिक्षण–रणनीति का निर्माण किया गया।

   2. **हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्रों में विकसित भावात्मक सौन्दर्य–बोध का पता लगाना।**

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्रों में विकसित भावात्मक सौन्दर्य–बोध का अध्ययन–

सारणी –1

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्रों में विकसित भावात्मक सौन्दर्य–बोध का अध्ययन : –

छात्र	भाव–सौन्दर्य	
	पूर्व	पश्च
मध्यमान	9.4	15.5
प्रतिशत मध्यमान	39.2	64.7
प्रमाप विचलन	1.5	2.1
मध्यमान प्रमाप विचलन	0.37	0.50
प्रमाप विचलन की त्रुटि	0.19	
सहसम्बन्ध	0.95	
टी मूल्य	32.04	

0.01 स्तर पर 99 प्रतिशत के साथ अन्तर सार्थक

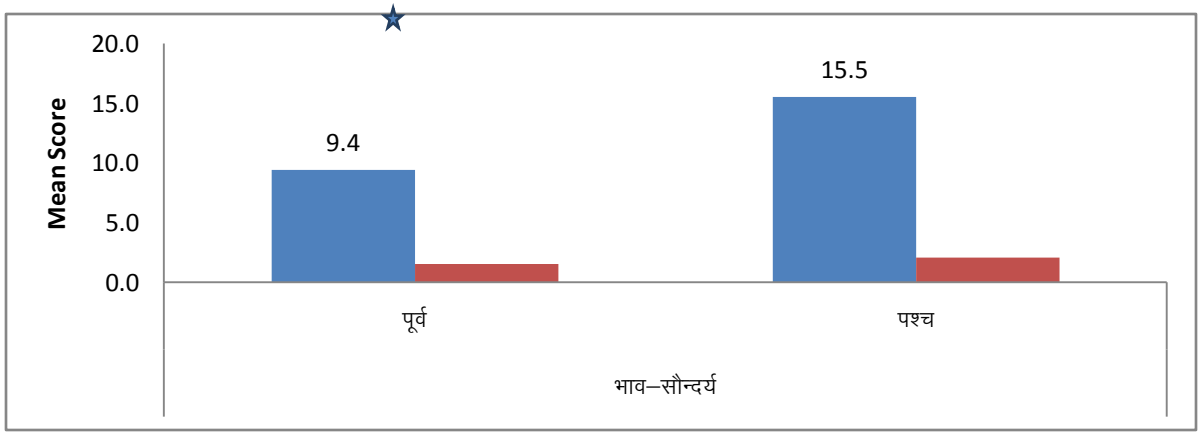

आरेख –1

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्रों में विकसित भावात्मक सौन्दर्य–बोध का अध्ययन।

व्याख्या एवं विश्लेषण : –

उपर्यक्त सारणी 1 में 17 छात्रों के समूह पर **भाव–सौन्दर्य** पर उपचार पूर्व एवं पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य अन्तर की सार्थकता को टी–परीक्षण द्वारा जाँचा गया है साथ ही आरेख 1 में मध्यमान प्राप्तांक एवं प्रमाप–विचलन की तुलना दर्शाई गई है।

टी–परीक्षण में प्राप्त परिफलित टी–मान 32.04 प्राप्त हुआ है $df = 33$ है अतः टी के $df = 35$ पर टी के 0.01 स्तर पर टेबल मान 2.72 से बहुत उच्च होने के कारण शून्य–परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि छात्रों पर उपचार के कारण **भाव–सौन्दर्य** पर उपचार पूर्व व उपचार पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों 99 प्रतिशत के साथ सार्थक अन्तर प्राप्त होता है।

उक्त परिणामों को आरेख 1 में पूर्व व पश्च मध्यमान प्राप्तांकों के दण्ड आरेख में 9.4 के मुकाबले 15.5 के अन्तर से परिलक्षित किया जा सकता है।

उद्देश्य : –

3. **हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से छात्राओं में विकसित भावात्मक सौन्दर्य–बोध का पता लगाना।**

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्राओं में विकसित भावात्मक सौन्दर्य–बोध का अध्ययन–

सारणी –2

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्राओं में विकसित भावात्मक सौन्दर्य–बोध का अध्ययन : –

छात्रा	भाव–सौन्दर्य	
	पूर्व	पश्च
मध्यमान	10.3	15.7
प्रतिशत मध्यमान	42.9	65.4
प्रमाप विचलन	2.0	3.0
मध्यमान प्रमाप विचलन	0.55	0.84
प्रमाप विचलन की त्रुटि	0.47	
सहसम्बन्ध	0.85	
टी मूल्य	11.36	

★ 0.01 स्तर पर 99 प्रतिशत के साथ अन्तर सार्थक ★

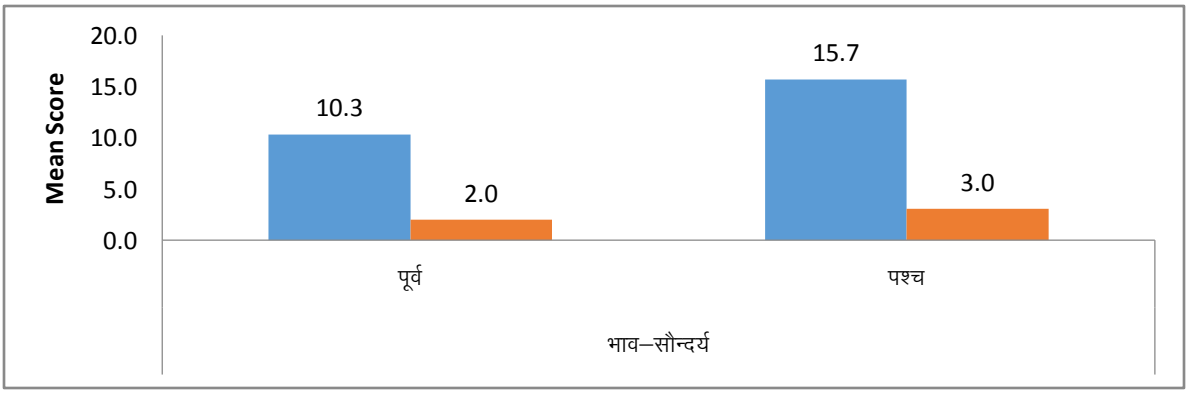

आरेख – 2

हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीति के माध्यम से छात्राओं में विकसित भावात्मक सौन्दर्य–बोध का अध्ययन।

व्याख्या एवं विश्लेषण : –

उपर्यक्त सारणी 2 में 13 छात्राओं के समूह पर **भाव–सौन्दर्य** पर उपचार पूर्व एवं पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों के मध्य अन्तर की सार्थकता को टी–परीक्षण द्वारा जाँचा गया है साथ ही आरेख 2 में मध्यमान प्राप्तांक एवं प्रमाप–विचलन की तुलना दर्शाई गई है।

टी–परीक्षण में प्राप्त परिफलित टी–मान 11.36 प्राप्त हुआ है जो टी के $df = 25$पर टी के 0.01 स्तर पर टेबल मान 2.79से बहुत उच्च होने के कारण शून्य–परिकल्पना को अस्वीकृत करते हुए कहा जा सकता है कि छात्राओं पर उपचार के कारण **भाव–सौन्दर्य** पर उपचार पूर्व व उपचार पश्चात् प्राप्त मध्यमान प्राप्तांकों 99 प्रतिशत के साथ सार्थक अन्तर प्राप्त होता है।

उक्त परिणामों को आरेख 2 में पूर्व व पश्च मध्यमान प्राप्तांकों के दण्ड आरेख में 10.3 के मुकाबले 15. 7 के अन्तर से परिलक्षित किया जा सकता है।

10. अनुसंधानपरक निष्कर्ष : –

1. परिकल्पना –**"हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से छात्रों में विकसित भावात्मक सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"**अस्वीकृत की जाती है क्योंकि छात्रों के भावात्मक सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में सार्थक अन्तर देखा गया है।
2. परिकल्पना –**"हिन्दी पद्य शिक्षण के अन्तर्गत प्रयुक्त शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से छात्राओं में विकसित भावात्मक सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"**अस्वीकृत की जाती है क्योंकि छात्राओं के भावात्मक सौन्दर्य–बोध सम्बन्धी पूर्व व पश्च परीक्षण प्राप्तांक में सार्थक अन्तर देखा गया है।
3. शिक्षण रणनीति के माध्यम से हिन्दी पद्य के अन्तर्गत**छात्रों** में भावात्मक सौन्दर्य–बोध का स्तर बढ़ा है।
4. शिक्षण रणनीति के माध्यम से हिन्दी पद्य के अन्तर्गत **छात्राओं** में भावात्मक सौन्दर्य–बोध का स्तर बढ़ा है।

11. अनुसंधानपरक सुझाव –

1. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण **शब्द सौन्दर्य–बोध** के लिए भी किया जा सकता है।
2. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण **अर्थ सौन्दर्य–बोध** के लिए भी किया जा सकता है।
3. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण **वैचारिक सौन्दर्य–बोध** के लिए भी किया जा सकता है।
4. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण **ध्वनि सौन्दर्य–बोध** के लिए भी किया जा सकता है।
5. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण हिन्दी भाषा की गद्य–विधा के लिए भी किया जा सकता है।
6. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण हिन्दी भाषा की कहानी–विधा के लिए भी किया जा सकता है।
7. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण हिन्दी भाषा की कथा–विधा के लिए भी किया जा सकता है।
8. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण हिन्दी भाषा की नाटक–विधा के लिए भी किया जा सकता है।
9. इस प्रकार की शिक्षण रणनीति का प्रयोग व निर्माण अन्य भाषाओ की अन्य – विधाओ के लिए भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची : –

- Karlinger, F. (1998): "Foundation of Behavioral Research" Surjeet Publication, New Delhi.
- Kuuswami, L. (2009): "child Behavior and Development", Konark Publication, New Delhi, India.
- Lokesk, K. (2005): "Method of Educational Research", Vikas Publication, New Delhi, India.
- Mangal, S.K. (2002): "Advanced Educational Psychology", Prentice hall India Pvt. Ltd.,
- Pathak, P.D. (2012): "Educational Psychology", Kanishk Publication, New Delhi, India.
- Sharma, R.A. (2006): "Research Methodology", Lal Book House Merut, U.P. India.

7. सिंह, निरंजन कुमार : माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
8. सिन्हा, शत्रुघन प्रसाद : हिन्दी भाषा की शिक्षण विधि, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली।
9. तिवारी, उदयनारायण : हिन्दी भाषा का उद्‌गम एवं विकास, भारती भण्डार, लीडर प्रेस इलाहाबाद।
10. वर्मा, ब्रजकिशोर : भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

Explore Innovate Educate

Shri Param Hans Education & Research Foundation Trust

www.SPHERT.org

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE AND INNOVATION

WWW.IRJMSI.COM